प्रकाशन संख्या : 270

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश)

इलाहाबाद

1988-89

NIEPA DC

D04860

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Aministration
17-B, Sri Aurbindo Marg, New Delhi-110016
DOC. No...... 4860
Date...... 12/9/89

प्राक्कथन

भारत एक विशाल और बहुजातीय देश है, जिसकी बहुरंगी संस्कृति, विभिन्न भाषाएँ एवं मान्यताएँ संगीत में मुखरित होती हैं। दिवंगत प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सामुदायिक गायन को राष्ट्र प्रेम की सुदृढ़ आधारशिला मानते हुए विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम को विद्यालयो शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग माना था, जिससे देश की सभी भाषाओं के कतिपय चुने हुए मधुर एवं प्रेरक गीतों के माध्यम सें बालक/बालिकाओं के अन्तर्मन में राष्ट्रीय एकता का संचार हो सके।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली तथा शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश के सम्मिलित प्रयास से सामुदायिक गायन शिविरों के आयोजन की अभिनव योजना प्रारम्भ की थी। उसी तारतम्य में इस शोध-अध्ययन के अन्तर्गत यह जानने का प्रयास किया गया है कि राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन के प्रशिक्षण का प्रयास किस सीमा तक सफल हो सका है। इसी परिप्रेक्ष्य में राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद द्वारा राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रशिक्षण एवं उसके प्रतिफल के प्रयासों के अध्ययन पर कार्य किया गया है।

आशा है, अध्ययन के निष्कर्ष शिविरों के सफल आयोजन सें सहायक होंगे।

गोविन्द बल्लभ पन्त

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश
लखनऊ।

आमुख

शिक्षण संस्थाओं में ही राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है। राष्ट्र की एकता ही राष्ट्र का जीवन है और जीवन को शक्ति प्रदान करने के लिए सामुदायिक गीतों का अपना विशिष्ट स्थान है। जब बहुत से लोग एक साथ मिलकर समूहगान के रूप में गीतों को प्रस्तुत करते हैं, तब एक अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है, क्योंकि संगीत भावात्मक एकता का एक सशक्त माध्यम है।

भारत सरकार ने सामुदायिक गायन के लिए युवक/युवतियों को प्रोत्साहित करने के लिए जो अभिनव योजना प्रारम्भ की है, उस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली तथा शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश का प्रयास सराहनीय है।

इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन की जानकारी के लिए राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद ने "राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन" शोध शीर्षक पर कार्य किया है।

इस शोध को पूर्ण करने में संस्थान की प्रोफेसर श्रीमती हेमलता मिश्रा का प्रयास सराहनीय हैं। इनके सहयोगी प्रवक्ता श्री जय प्रकाश ने विद्यालयों से सूचना संकलन में सहयोग प्रदान किया है। इसके सम्पादन में वरिष्ठ शोध अधिकारी श्री राम कृष्ण जायसवाल एवं उप-प्राचार्य डॉ० एस० एन० पी० जायसवाल को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इसका मुद्रण संस्थान के फ्रोफेसर डा० महेश प्रताप नारायण अवस्थी की देख-रेख में सम्पन्न हुआ है।

(डॉ०) राम प्रसाद ध्यानी

प्राचार्य

राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान

इलाहाबाद

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ
१.	पृष्ठभूमि	...	१
२.	उद्देश्य	...	२
३.	परिकल्पना	...	३
४.	परिसीमन	...	३
५.	कार्यविधि	...	४
६.	विश्लेषण	...	५
७.	निष्कर्ष	...	२२
८.	सुझाव	...	२४

———

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	ऐसा	ऐसी
९	९	है	×
१०	२	रहन-सहन संगीत	रहन-सहन, संगीत
१०	१४	रूप	रूप में
१३	८	संख्या	संस्था
१३	२२	अध्यापिकाएँ	अध्यापिकाओं ने
१३	अंतिम	है	हैं
१५	१०	भाषा	भाषाओं
१५	५	वाद्यु	वाद्य
१५	९	में	के
१५	११	का	में
२०	१४	वर्ग	×
२१	४	एकता	एकता,
२१	४	सहयोग	सहयोग,
२१	८	विकास	विकास,
२१	४	भेदभाव	भेदभाव,
२२	अंतिम	स्वामित्व	स्थायित्व
२४	१	हो	ही
२४	१६	सूझाव	सुझाव
२८	५	पृच्छ	पृच्छा

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन

१. पृष्ठभूमि

देश की सुरक्षा और समृद्धि के लिए राष्ट्रीय एकता का महत्त्व सर्वोपरि है। शिक्षण संस्थानों में ही राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है। राष्ट्र की एकता ही राष्ट्र का जीवन है।

आज का व्यक्ति स्वार्थ एवं संकीर्णता की परिधि में बँध गया है जिससे मानव मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। अतः आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि अपने और पराये का भेद समाप्त हो। मनुष्यों में परस्पर रागात्मकता का विकास हो, ताकि समाज में हम पारस्परिक हितों का ध्यान रखते हुए—"जियो और जीने दो" के सिद्धान्त को कार्यान्वित कर सकें। यह मानवतावादी दृष्टिकोण ही राष्ट्रीय एकता के परिपेक्ष्य में जातीयता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता के संकीर्ण भेदभाव से मुक्त होकर प्रेमपूर्वक चलने की प्रेरणा दे सकेगा एवं सबके हृदय को स्नेह-सूत्र में बाँधकर कर्त्तव्य पालन का मार्ग प्रशस्त करेगा।

भारत एक विशाल और बहुजातीय देश है, जिसकी बहुरंगी संस्कृति, उसकी विभिन्न भाषाओं, मान्यताओं और संगीत में मुखरित होती है। अतः एक बहुजातीय देश में उन सभी विविध रूपों को मान्यता प्रदान कर एक ऐसे स्वप्न का सृजन अभीष्ठ है, जो सभी समुदायों को देश की धरती की गन्ध से सुवासित कर एक अखण्ड इकाई के रूप में अस्मिता दे सके। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने देश के बच्चों में अपनी भाषा से इतर अन्य भाषाओं के गीतों की सुर-ताल सम्बन्धी उत्कृष्ट अनुभूति और संगीतात्मक अभिरुचि के संस्कार जाग्रत कर सकें।

दिवंगत प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने इसी लिए सामुदायिक गायन को राष्ट्र प्रेम को सुदृढ़ आधारशिला मानते हुए विद्यालयों में सामुदायिक गायन की ऐसी उद्भावना व्यक्त की थी, जिसके अन्तर्गत देश की सभी भाषाओं के कतिपय चुने हुए मधुर और प्रेरक गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का संचार प्रारम्भ से ही बालक/बालिकाओं में प्रस्फुटित हो और रूप, रंग, वेश-भूषा, भाषा और प्रान्त की विभिन्नताओं के होते हुए भी आपस में वे इस प्रकार एकाकार हो जायँ, जैसे—महासिन्धु में सरिताएँ ।

भारत सरकार ने संयुक्त गान के लिए युवक/युवतियों को प्रोत्साहित करने को प्रशिक्षण योजना प्रारम्भ की है, उस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली तथा शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश के सम्मिलित प्रयास से विगत कई वर्षों से केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद तथा प्रदेश के अन्य स्थानों पर समय-समय पर समूहगान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता रहा है ।

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामूहिक गायन के प्रयासों से सम्बन्धित अब तक जो भी कदम उठाये गये हैं, क्या वे सही दिशा में अग्रसर हैं ? यदि हाँ तो किस सीमा तक उन्होंने सफलता प्राप्त की है ? यदि नहीं तो हमारे कार्य-कलाप में क्या त्रुटियाँ रह गई हैं, इसका निराकरण अथवा समाधान कैसे हो, इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु यह अध्ययन किया गया हैं । इस सम्बन्ध में राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद में ७ फेरे चल चुके हैं तथा राजकीय डिमांस्ट्रेशन स्कूल में एक साथ प्रशिक्षण के फलस्वरूप गीतों का अभ्यास कराया जाता है ।

२. उद्देश्य

(१) राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के निर्माण में सामुदायिक गायन के प्रभाव का अध्ययन करना ।

(२) मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण हेतु पथ-प्रशस्त करना ।

(३) देश और इसकी समृद्ध विरासत के प्रति गौरवभाव जागृत करने के साथ ही सभी भाषाओं के प्रति आदर उत्पन्न करना ।

(४) रचनात्मक सामूहिक कार्य-कलापों में युवक/युवतियों को सहभागिता के लिए तैयार करना।

(५) १४ गीतों के अभ्यास कराने का प्रत्यक्ष परिणाम आँकना।

३. परिकल्पना

(१) सामुदायिक गायन के गीतों के माध्यम से विद्यालय के छात्र/छात्राओं के विचारों में परिवर्तन होगा।

(२) सामुदायिक गायन के गीतों के अभ्यास से राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बल मिलेगा।

४. परिसीमन

उक्त विषयक शोध-अध्ययन को इलाहाबाद जनपद के नगरीय-ग्रामीण, २० माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा ९ तथा १०) तक ही सीमित किया गया है। इनका विवरण निम्न है :

(१) राजकीय बालिका इण्टर कालेज, इलाहाबाद।

(२) राजकीय बालिका इण्टर कालेज, फूलपुर, इलाहाबाद।

(३) राजकीय बालिका इण्टर कालेज, शंकरगढ़, इलाहाबाद (ग्रामीण)।

(४) कस्तूरबा गाँधी बालिका इ० का०, भरवारी, इलाहाबाद (ग्रामीण)।

(५) आर्ब कन्या इ० का०, इलाहाबाद (स्थानीय)।

(६) गौरी पाठशाला इ० का०, इलाहाबाद (स्थानीय)।

(७) द्वारिका प्रसाद गर्ल्स इ० का०, इलाहाबाद (स्थानीय)।

(८) जगत तारन गर्ल्स इ० का०, इलाहाबाद (स्थानीय)।

(९) नवीन महिला सेवा सदन इ० का०, इलाहाबाद।

(१०) के० पी० बालिका इ० का०, इलाहाबाद।

(११) हिन्दू महिला गर्ल्स इ० का०, इलाहाबाद।

(१२) महिला सेवा सदन इ० का०, बैरहना, इलाहाबाद।

(१३) महिला ग्राम इ० का०, सूबेदारगंज, इलाहाबाद।

(१४) प्रयाग महिला विद्यापीठ इ० का०, इलाहाबाद।

(१५) गोपीनाथ गिरजानन्दिनी आदर्श क० उ० मा० वि०, इलाहाबाद।

(१६) राजकीय इण्टर कालेज, इलाहाबाद।

(१७) भारत स्काउट और गाइड उ० मा० वि०, इलाहाबाद।

(१८) अग्रसेन इण्टर कालेज, इलाहाबाद।

(१९) यमुना क्रिश्चियन इ० का०, इलाहाबाद।

(२०) गाँधी स्मारक इ० कालेज, कल्यानपुर, इलाहाबाद (ग्रामीण)।

उपर्युक्त ऐसे माध्यमिक विद्यालयों का ही चयन किया गया है, जहाँ पर सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक/अध्यापिका ही कार्यरत हैं।

अवधि

८ माह (जुलाई १९८७ से फरवरी १९८८)

कार्यविधि

(१) **प्रतिदर्श चयन** :—प्रतिदर्श का चयन रेण्डम सैंपलिंग विधि से किया गया है। इलाहाबाद जनपद के २० माध्यमिक विद्यालयों के अन्तर्गत २० प्रधानाचार्यों, २० सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक/अध्यापिकाओं तथा १०० छात्र/छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया था, किन्तु १६ माध्यमिक विद्यालयों से ही सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन किया जा सका। इसके अन्तर्गत एक राजकीय बालिका इण्टर कालेज, फूलपुर है, जहाँ की अध्यापिका सामुदायिक गायन प्रशिक्षण शिविर से अभी तक प्रशिक्षण नहीं कर सकी हैं। अतः १५ माध्यमिक विद्यालयों से ही शोध कार्य पूर्ण किया गया है।

(२) इस कार्य के लिए निम्नलिखित पृच्छा प्रपत्र का निर्माण किया गया है :

(क) पृच्छा प्रपत्र—१ (प्रधामाचार्य/प्रधानाचार्या हेतु)।

(ख) पृच्छा प्रपत्र—२ (अध्यापक/अध्यापिकाओं हेतु)।

(ग) पृच्छा प्रपत्र—३ (छात्र/छात्राओं हेतु)।

(३) प्रदत्त संग्रह

पृच्छा प्रपत्रों के माध्यम से विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्याओं, सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक/अध्यापिकाओं एवं सम्बन्धित छात्र/छात्राओं से सूचना प्राप्त करके तथा उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करके मौखिक प्रश्नों द्वारा वास्तविक तथ्यों की जानकारी प्राप्त की गई है ।

बार-बार व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने के पश्चात् कुल सूचनायें जो प्राप्त हुईं वे इस प्रकार हैं :

(१) प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्यायें—१५

(२) अध्यापक/अध्यापिकायें—१३

(३) छात्र/छात्रायें—७०

विश्लेषण

प्रश्नावलियों के प्रति—उत्तरों से प्रधानाचार्यों/प्रधानाचार्याओं, अध्यापकों/अध्यापिकाओं (सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्राप्त) एवं छात्र/छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों से सम्बन्धित सुझावों के अन्तर्गत अनुभूत किये जाने वाले तथ्य प्राप्त हुए । फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन कार्यक्रम का प्रयास कहाँ तक सफल रहा; निम्न विश्लेषण द्वारा इसकी जानकारी प्राप्त होती है :

पृच्छा प्रपत्र—१ के सम्बन्ध में प्रधानों से प्राप्त उत्तर

तालिका—१

क्या आपके विद्यालथ में सामुदायिक गायन सम्बन्धी कार्य होता है ?

प्रयुक्त पृच्छा प्रपत्र २०	पुरुष प्राचार्य		महिला प्राचार्या		पुरुष प्राचार्य	महिला प्राचार्या	लोग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	संख्या	संख्या	
प्राप्त पृच्छा प्रपत्र १५	√	×	√	×	२	१३	१५

सभी १५ विद्यालयों के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्याओं ने स्वीकार किया है कि उनके विद्यालयों में सामुदायिक गायन का अभ्यास कराया जाता है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि शत प्रतिशत अभ्यास जारी है। इस प्रकार सामुदायिक गायन का कार्यक्रम राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को बताता है।

तालिका—२

प्रशिक्षण अभ्यास हेतु दिये गये समय की अवधि

संस्थाओं की संख्या	१५ मिनट का कार्यक्रम	३० मिनट का कार्यक्रम	रिक्त घण्टे की अवधि में	१ घण्टा सप्ताह में	२ घण्टे सप्ताह में	कोई निर्धारित समय नहीं
६	√					
५		√				
१			√			
१					√	
२						√

(क) तालिका—२ से स्पष्ट है कि १५ विद्यालयों में से ६ विद्यालय १५ मिनट का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रार्थना स्थल पर कराते हैं, अर्थात् ४० प्रतिशत संस्थाओं में १५ मिनट के कार्यक्रम का अभ्यास कराया जाता है।

(ख) उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि १५ विद्यालयों में से ५ विद्यालय ३० मिनट प्रतिदिन सामुदायिक गायन कार्यक्रम कराते हैं अर्थात् ३३ प्रतिशत विद्यालयों में प्रतिदिन ३० मिनट का समय कार्यक्रम के अभ्यास हेतु दिया जाता है।

(ग) १ विद्यालय में अध्यापक के अवकाश पर होने के प्रबन्ध के घण्टे में सामुदायिक गायन कार्यक्रम की व्यवस्था की जाती है।

(घ) १ विद्यालय में सप्ताह में २ घण्टे इस कार्यक्रम के लिए निर्धारित किये गये हैं।

(ङ) २ विद्यालयों में किसी पर्व पर यह कार्यक्रम कराया जाता है। इसके लिए कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि विद्यालयों में सामुदायिक गायन के अभ्यास का कोई निश्चित समय नहीं है। सभी अपनी सुविधानुसार इस कार्यक्रम की व्यवस्था करते हैं।

तालिका—३

इस कार्यक्रम के अभ्यास के प्रति प्रधानों के विचार

संस्थाओं की संख्या	पुरुष प्रधानाचार्य संख्या—२		महिला प्रधानाचार्य संख्या—१३		योग
	सहमति	असहमति	सहमति	असहमति	
१५	√	×	√	×	१५

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन के महत्त्व को तथा उनके अभ्यास के लिए सभी प्रधानों की सहमति प्राप्त हुई है। ऐसा कोई विद्यालय नहीं है, जहाँ के प्रधान ने अपनी असहमति व्यक्त करते हुए अन्य विकल्प को प्रस्तुत किया हो और अपना सुझाव दिया हो।

तालिका—४

सामुदायिक गायन के अभ्यास से छात्र/छात्राओं के आचरण एवं व्यवहार की स्थिति

पुरुष प्रधानाचार्य	छात्र प्रभावित	छात्र अप्रभावित	आचरण व्यवहार में परिवर्तन
संख्या २	√	×	√
महिला प्रधानाचार्या संख्या—१३	√	×	√

उक्त तालिका से विदित होता है कि सामुदायिक गायन कार्यक्रम के अभ्यास से छात्र/छात्राओं के आचरण एवं व्यवहार में अवश्य प्रभाव पड़ा है। ऐसा शत प्रतिशत प्रधानों की राय हैं। इनके मतानुसार छात्र/छात्रायें इस कार्यक्रम से अवश्य लाभान्वित हुए हैं।

तालिका—५

सामुदायिक गायन से सम्बन्धित अन्य कार्य-कलापों की जानकारी

प्रधानों की संख्या	गाइडिंग, राष्ट्रीय पर्व	ईश-वन्दना, लोकगीत, नृत्य	गोष्ठियाँ, भाषण, वाद-विवाद	नाटक प्रतियोगिता, सामूहिक गीत	अन्त्याक्षरी	कोई मत नहीं दिया
९	√	×	√	√	×	×
२	×	√	√	×	√	×
२	×	√	×	√	√	√

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से यह विदित होता है कि १५ में से १३ प्रधानों का मत है कि सामुदायिक गायन कार्यक्रम से सम्बन्धित अन्य कार्य-कलाप भी विद्यालयों में कराये जाते हैं और वे इस बात से सहमत हैं कि उक्त कार्यों पर बल देने से राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में प्रगति सम्भव होगी, लेकिन २ प्रधानाचार्यों ने इस विषय में अपने विचारों को व्यक्त नहीं किया हैं। इस प्रकार ८७ प्रतिशत प्रधानों का मत है कि सामुदायिक गायन से सम्बन्धित अन्य क्रिया-कलाप भी राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सहायक होते हैं।

तालिका—६

सामुदायिक गायन के अभ्यास हेतु शिक्षकों की स्थिति

संगीत		सामान्य		सामुदायिक गायन प्रशिक्षण		योग
अध्यापक	अध्यापिका	अध्यापक	अध्यापिका	अध्यापक	अध्यापिका	
×	१२	१	×	१	१२	१३

उक्त तालिका से विदित होता है कि १५ विद्यालयों में से १३ विद्यालयों के सामुदायिक गायन प्रशिक्षित अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के मत प्राप्त हुए हैं। यही लोग इस कार्यक्रम का संचालन करते हैं। सामान्य विषय में १ ही अध्यापक है (जो उक्त प्रशिक्षण प्राप्त हैं) इस कार्यक्रम का प्रशिक्षण देता है; शेष १२ प्रशिक्षित संगीत अध्यापिकायें ही इस कार्यक्रम का अभ्यास छात्राओं को कराती हैं। इससे स्पष्ट हैं कि सामुदायिक गायन प्रशिक्षण पर बल दिया जा रहा है, जिसे एक ही प्रशिक्षित अध्यापिका प्रशिक्षण प्रदान करती है।

तालिका—७

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु प्रधानों के सुझाव :

प्रधानों की संख्या	बी०डी०ओ० टेपरिकार्ड्स सम्बन्धित पुस्तकों का दिया जाना	सामुदायिक गायनकार्यों पर बल	पर्यटन एवं भ्रमण	विभिन्न भाषाओं का ज्ञान	प्रतियोगिता अवसर देना आवश्यक
	१	२	३	४	५
६	√	√			
४	√		√	√	
३					√
२		√		√	

प्रधानों की संख्या	विभिन्न प्रदेशों के रहन-सहन संगीत नृत्य पर बल	एक विशेष दिवस पर विशेष प्रदेश के सांस्कृतिक कार्यक्रम पर बल	सामुदायिक गायन अनिवार्य विषय, इसमें परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक
	६	७	८
६			√
४	√		
३		√	
२			

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि १५ विद्यालयों में से ६ विद्यालय के प्रधानों की राय है कि इस कार्यक्रम के उन्नयन में प्रत्येक विद्यालय को बी०डी०ओ० कैसेट, सम्बन्धित टेपरिकार्ड्स एवं सम्बन्धित सामुदायिक गायन पुस्तकों का दिया जाना लाभकारी होगा तथा इससे सम्बन्धित कार्यक्रम पर बल दिया जाना आवश्यक होगा।

इसके अतिरिक्त सामुदायिक गायन को जूनियर स्तर पर अनिवार्य विषय के रूप मानकर उसमें परीक्षा उत्तीर्ण करना छात्र एवं छात्रा के लिए अनिवार्य करना आवश्यक होगा।

१५ विद्यालयों में से ४ विद्यालय के प्रधानों का मत है कि छात्र/छात्राओं को विभिन्न प्रदेशों के भ्रमण हेतु अवसर देना अति आवश्यक होगा, फलस्वरूप वे विभिन्न प्रदेशों के रहन-सहन, वेशभूषा, आचार-विचार, खान-पान एवं संस्कृति से भली भाँति परिचित हो सकेंगे।

विद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रदेशीय भाषाओं का ज्ञान छात्र/छात्राओं को कराया जाना हितकर होगा, जिससे वे भाषा के माध्यम से गायन का वास्तविक अर्थ सरलता के साथ समझ सकें।

३ विद्यालयों के प्रधानों का सुझाव है कि उक्त कार्यक्रम को सफलीभूत बनाने के लिए छात्रों को प्रतियोगिता का अवसर दिया जाना आवश्यक होगा। प्रत्येक प्रदेश के लिए एक निश्चित दिन रखना आवश्यक होगा। उस निश्चित दिन में उस विशेष प्रदेश की वेषभूषा, भाषा, भोजन की व्यवस्था एवं अभिवादन प्रणाली का आयोजन करना आवश्यक होगा। इससे भावात्मक एकता को बल मिलेगा।

२ विद्यालय के प्रधानों ने सामुदायिक गायन से सम्बन्धित कार्यों पर ही बल दिया है। इसके अतिरिक्त छात्र/छात्राओं के लिए विभिन्न भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक बतलाया है। क्योंकि विभिन्न भाषाओं में सामुदायिक गायन का वास्तविक अर्थ, सुर एवं लय की सही अनुभूति, भाषाओं की जानकारी के फलस्वरूप ही सम्भव है। जिसके प्रशिक्षण के लिए अभ्यास की आवश्यकता है।

(ख) पृच्छा प्राप्त-२ के सम्बन्ध में अध्यापक/अध्यापिकाओं से प्राप्त उत्तर

तालिका–८

क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक गायन सम्बन्धी कार्य होता है ?

प्रयुक्त पृच्छा	पुरुष अध्यापक		अध्यापिका		अध्यापक	अध्यापिका	योग
प्रपत्र २०	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	संख्या	संख्या	
प्राप्त पृच्छा प्रपत्र १३	√		√		१	१२	१३

उक्त तालिका का अवलोकन करने से विदित होता है कि १३ विद्यालयों के सामुदायिक गायन प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं ने अपनी सहमति व्यक्त की है कि उनके विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम का अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार शत-प्रतिशत अभ्यास जारी है।

तालिका–९

प्रशिक्षण अभ्यास हेतु प्रति सप्ताह दिये गये समय की अवधि :

संस्थाओं की अध्यापक संख्या	एक घण्टा प्रतिसप्ताह	दो घण्टा प्रतिसप्ताह	तीन घण्टा प्रतिसप्ताह	योग विद्यालय संख्या
७		√		
५	√			
१			√	१५

तालिका ९ से स्पष्ट है कि १५ विद्यालयों में से १३ संस्थाओं के सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक/अध्आपिकाओं के निम्नवत् मत इस सम्बन्ध में प्राप्त हुए हैं—

(क) ७ विद्यालयों में उक्त कार्यक्रम के अभ्यास के लिए सप्ताह में २ घण्टे की व्यवस्था की गई है।

(ख) ५ विद्यालयों में प्रति सप्ताह इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु १ घण्टे का समय निर्धारित किया गया है।

(ग) १ विद्यालय में प्रति सप्ताह ३ घण्टे का समय इस कार्यक्रम के अभ्यास हेतु दिया जाता है।

उपर्युक्त अध्ययन से यह विदित होता है कि विद्यालयों में सामुदायिक गायन प्रशिक्षण कार्यक्रम के अभ्यास के लिए अध्यापक वर्ग को कोई निश्चित समय नहीं दिया गया है, बल्कि सभी विद्यालय अपनी-अपनी सुविधानुसार ही इसके अभ्यास हेतु समय निर्धारित कर लेते हैं।

तालिका-१०

सामुदायिक गायन कार्यक्रम के अभ्यास हेतु दिया गया समय क्या पर्याप्त है ?

संस्थाओं की संख्या	दिया गया समय पर्याप्त है	दिया गया समय अपर्याप्त है
७	√	
६		√

तालिका १० का अवलोकन करने पर विदित होता है कि ७ विद्यालयों की संगीत अध्यापिकाओं ने "हाँ" में अपनी स्वीकृति दी है अर्थात् उनका कहना है कि प्रति सप्ताह २ घण्टे का अभ्यास इस कार्यक्रम के अभ्यास के लिए पर्याप्त है, किन्तु इसके विपरीत ६ विद्यालयों के सम्बन्धित शिक्षकों का कहना है कि इस योजना को सफलीभूत बनाने के लिए समय अपर्याप्त है।

तालिका-११

सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं की जानकारी

संस्थाओं की संख्या	प्रशिक्षण संस्था के नाम	संगीतशिक्षक		सामान्य शिक्षक		सामुदायिक गायन प्रशिक्षण प्राप्त	
		अध्या-पक	अध्या-पिका	अध्या-पक	अध्या-पिका	अध्या-पक	अध्या-पिका
८	राजकीय सी०पी०आई० इलाहाबाद	७		१	१		१२
५	डी०ए०वी० कालेज दरियाबाद, लखनऊ	५					
	योग	१२		१	१		१२
	महायोग	= १३		= १३			

सामुदायिक गायन कार्यक्रम में कहाँ से शिक्षक वर्ग ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, इसकी जानकारी तालिका-११ को देखने से मिलती है। ८ शिक्षक/शिक्षिकाओं ने राजकीय सी०पी०आई०, इलाहाबाद से उक्त प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके अन्तर्गत ७ संगीत अध्यापिकायें तथा १ शिक्षक है। ये शिक्षक सामान्य विषयों का शिक्षण कार्य करते हैं। ५ संगीत अध्यापिकायें डी०ए०वी० कालेज, दरियाबाद, लखनऊ से इस प्रशिक्षण का कोर्स पूरा किया है। इस प्रकार यह विदित होता है कि शत-प्रतिशत अध्यापक एवं अध्यापिकायें विभिन्न संस्थाओं द्वारा इस कार्यक्रम में प्रशिक्षित की गई है।

तालिका—१२

सामुदायिक गायन कार्यक्रम में प्रशिक्षित शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा छात्रों की रुचि तथा सम्बन्धित अन्य कार्य कलाप कराये जाने से सम्बन्धित स्थिति :

सामुदायिक नायन से सम्बन्धित अन्य कार्य-कलाप

संस्थाओं की संख्या	छात्र/छात्रायें रुचि/अरुचि	राष्ट्रीयगायन, प्रतियोगितायें,	नृत्य, लोकगीत, नाटक, सामूहिक गीत, प्रादेशिक भाषाओं की जानकारी
९	√	√	√
४	√	×	×

योग = १३

जहाँ तक उक्त विषय के अभ्यास में छात्र/छात्राओं द्वारा रुचि अथवा अरुचि लेने का प्रश्न है, लगभग सभी प्रशिक्षित शिक्षक वर्ग के मतानुसार इस कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप प्रदान करने में छात्र/छात्राओं की विशेष रुचि है। तालिका—१२ के अनुसार १३ विद्यालयों के शतप्रतिशत छात्र/छात्राओं ने इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपनी रुचियों को व्यक्त किया है।

तालिका—१२ को देखने से विदित होता है कि ९ संस्थाओं के प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक/शिक्षिकाओं के मतानुसार सामुदायिक गायन कार्यक्रम सें सम्बन्धित अन्य कार्यक्रमों को भी कराया जाता है। जैसे—राष्ट्रीय गान, प्रतियोगिताएँ, नाटक. सामूहिक नृत्य, लोकगीत, सामूहिक गीत तथा प्रादेशिक भाषाओं में एकता सम्बन्धी गीतों एवं नृत्यों की व्यवस्था।

४ संस्थाओं के शिक्षक वर्ग ने इस प्रकार के कार्यक्रमों को कराये जाने में अपने विचारों से अवगत नहीं कराया है।

प्रशिक्षित शिक्षक/शिक्षिकाओं के मतानुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि १३ विद्यालयों के शतप्रतिशत छात्र एवं छात्रायें इस कार्यक्रम के अभ्यास में रुचि ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित अन्य कार्यक्रमों को भी कराया जाता है।

तालिका—१३

सामुदायिक गायन विधा को राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की रक्षा सम्बन्धी भावनाओं को छात्र/छात्रों में भरने हेतु शिक्षक वर्ग का सुझाव—

संस्थाओं की संख्या	प्रतिदिन एक अतिरिक्त घण्टा इस कार्य हेतु दिया जाय	प्रतिदिन सामुदायिक रूप से देश-भक्ति गीतों का अभ्यास विभिन्न भाषा में लोक नृत्य एवंलोकगीतों का आयोजन	प्रत्येक प्रशिक्षित विद्यालय में सा० गा०कैसेट व टेप रिकार्डर की व्यवस्था	विभिन्न भाषाओं सें अन्य राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी गीतों का चयन एवं उसका अभ्यास	विभिन्न वाद्य यंत्रों का सामुदायिक गायन में उपयोग का प्रभावी बनाना	भ्रमण का अवसर देना	विभिन्न भाषाओं का प्रारम्भिक ज्ञान देना आवश्यक है जिससे सरलता सें छात्र समझ सकें।
६	√	√					
४			√	√			
३					√	√	√

तालिका—१३ के अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न १३ संस्थाओं के शिक्षक वर्ग ने इस विषय में अपने भिन्न-भिन्न मतों को व्यक्त किया है।

६ शिक्षकों के मतानुसार सामुदायिक गायन कार्यक्रम के अभ्यास के लिये प्रतिदिन कम से कम एक अतिरिक्त घण्टे की व्यवस्था करना अत्यावश्यक होगा। इसके अतिरिक्त सामूहिक रूप से प्रतिदिन देश भक्ति गीतों का अभ्यास एवं विभिन्न भाषाओं में लोक नृत्य तथा लोक गीतों का आयोजन करना लाभकारी होगा।

४ विद्यालयों के शिक्षकों के मतानुसार प्रत्येक प्रशिक्षण प्राप्त विद्यालय में सामूहिक गायन से सम्बन्धित कैसेट तथा टेप रिकार्डर्स देने की व्यवस्था की जानी आवश्यक है, क्योंकि सामुदायिक गायन के माध्यम से छात्र/छात्राओं में राष्ट्रीय एकता की भावनाओं का संचार होता है। इसलिए इसका अभ्यास सही ढंग से किया जाना अपेक्षित होगा।

इसके अतिरिक्त विभिन्न भाषाओं में अन्य राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी गीतों का चयन किया जाय और छात्रों को उनका अभ्यास कराया जाय जिससे धीरे-धीरे राष्ट्रीय एकता की भावना सभी में जागृत हो सके।

३ विद्यालयों के प्रशिक्षित शिक्षकों के कथनानुसार विभिन्न वाद्य यन्त्रों के उपयोग से सामुदायिक गायन को प्रभावी बनाया जा सकता है। विभिन्न प्रदेशों में छात्र/छात्राओं को भ्रमण कराया जाना लाभकारी होगा। वहाँ की भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान देना हितकर होगा, जिसके फलस्वरूप वे गीतों का वास्तविक अर्थ सरलता से समझ सकेंगे, क्योंकि केवल गाने को रट लेने अथवा सुनकर उच्चारण करने से वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति सम्भव नहीं है।

उपर्युक्तानुसार यह विदित हो जाता है कि १३ विद्यालयों के प्रशिक्षण प्राप्त संगीत शिक्षक वर्ग ने विभिन्न प्रकार के सुझाव इस कार्यक्रम को सफलीभूत बनाने के लिए दिये है। इनके सुझाव इस बात को इंगित करते हैं कि राष्ट्रीय एकता के उन्नयन की सफलता हेतु शतप्रतिशत शिक्षक वर्गों का सुझाव सराहनीय है।

पृच्छा प्रपत्र-३ के सम्बन्ध में छात्र/छात्राओं से प्राप्त उत्तर

तालिका–१४

विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम की शिक्षा दिये जाने के सम्बन्ध में छात्र/छात्राओं से प्राप्त उत्तर—

प्रयुक्त पृच्छा प्रपत्र	छात्र संख्या	छात्रा संख्या	योग	छात्रउत्तर		छात्राउत्तर		योग
१००				हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
प्राप्त पृच्छा प्रपत्र								
७०	१०	६०	७०	√	×	√	×	७०

तालिका—१४ का अवलोकन करने पर विदित होता है कि १०० छात्र/छात्राओं में से १० छात्र तथा ६० छात्राओं ते सामुदायिक गायन की शिक्षा दिये जाने के सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त किया है। इस प्रकार शत प्रतिशत छात्रों के उत्तर इस कार्यक्रम की शिक्षा दिये जाने के सम्बन्ध में प्राप्त हुए हैं।

तालिका-१५

सप्ताह में यह विषय कितने घण्टे कराये जाने की व्यवस्था है ?

१५ विद्यालयों की कुल छात्र संख्या ७०	प्रतिदिन प्रार्थना स्थल पर दिया जाने वाला समय	१ घंटे का समय	२ घंटे का समय	३ घंटेका समय
४८ छात्राएँ	√			
८ छात्र	√			
८ छात्राएँ			√	
४ छात्राएँ				√
२ छात्र		√		

उपर्युक्त तालिका—१५ के अनुसार ४८ छात्राओं तथा ८ छात्रों का कथन है कि प्रतिदिन प्रार्थना स्थल पर प्रार्थना अवधि के अन्तर्गत सामुदायिक गायन का अभ्यास कराया जाता है। ८ छात्राओं के मतानुसार इस कार्यक्रम के लिए प्रति सप्ताह २ घण्टे का समय दिया जाता है। ४ छात्राओं का कहना है कि प्रति सप्ताह इस कार्य के लिए ३ घण्टे का समय निर्धारित किया गया है किन्तु २ छात्रों के मतानुसार सप्ताह में केवल एक घण्टे की अवधि सामुदायिक गायन अभ्यास के लिये दिया जाता है। इस प्रकार उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम का अभ्यास कराया जाता है किन्तु यह निश्चित है कि सभी विद्यालय अपनी सुविधा के अनुसार ही इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु समय का निर्धारण करते हैं।

तालिका-१६

छात्र/छात्राओं को सामुदायिक गायन कार्यक्रम में रुचि है अथवा नहीं, यदि है तो क्यों? इस स्थिति की जानकारी।

छात्र संख्या १०		छात्राओं की संख्या ६०		योग ७०	
रुचि	अरुचि	रुचि	अरुचि	रुचि	अरुचि
७	३	६०	×	६७	३

रुचि का करण

संगीत-प्रेम, विभिन्न भाषाओं में गायन सीखने की जिज्ञासा, देश-भक्ति की भावना, एकता की भावना का संचार, प्रशिक्षित अध्यापिका का समान व्यवहार, जाति-पाँति के भेदभाव का दूर होना, विभिन्न भाषाओं के सीखने का अवसर प्राप्त होना।

अरुचि का कारण

सामुदायिक गायन में भाषा की क्लिष्टता है। इसके धुन और राग अरोचक लगते हैं।

इस विषय में जहाँ तक छात्र/छात्राओं की रुचि/अरुचि की जानकारी ज्ञात करने का प्रश्न है, कुल ७० विद्यार्थियों में से ६७ ने सामुदायिक गायन कार्यक्रम में अपनी रुचि दिखलाते हुए जिज्ञासा व्यक्त किया है। तालिका-१६ के अनुसार उन्होंने अपनो रुचि के कारण से भी अवगत कराया है जो उनकी वास्तविक भावनाओं को प्रगट करता है। इनमें ३ छात्रों की विचारधारा उपर्युक्त ६७ लोगों से भिन्न पाई गयी। उन्होंने इस कार्यक्रम में अपनी अरुचि दिखलाते हुये इसके कारण से अवगत कराया है जो महत्त्वपूर्ण नहीं है।

तालिका—१७

सामुदायिक गायन कार्यक्रम का अभ्यास देने के लिए विशिष्ट शिक्षक/शिक्षिकाओं के नियुक्ति तथा अन्य शिक्षकों के योगदान के सम्बन्ध में ।

संस्थाओं की संख्या १५	छात्र/छात्राओं की कुल संख्या ७०	१५ विद्यालयों में संगीत विषय के शिक्षक		सामुदायिक गायन प्रशिक्षित सामान्य विषय के शिक्षक		विशिष्ट रूप से शिक्षक नियुक्ति		सामुदायिक गायन कार्यक्रम में शिक्षक वर्ग का योगदान	
		शिक्षक	शिक्षिका	शिक्षक	शिक्षिका	शिक्षक	शिक्षिका	सहयोग	असहयोग
	३७	×	६	१	×	×	×	—	—
	३३	×	६	—	×	×	×	√	×
योग	७०		१२	१=१३		—	—	√	×

विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम के अभ्यास के लिये जहाँ तक विशिष्ट अध्यापक/अध्यापिकाओं की नियुक्ति का प्रश्न है, छात्र/छात्राओं के मतानुसार उनके विद्यालयों में इस प्रकार के किसी शिक्षक की अलग से व्यवस्था नहीं की गई है। कुल ७० छात्र/छात्राओं में से ३७ शिक्षार्थियों का कहना है कि विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम का अभ्यास सामुदायिक गायन प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं द्वारा कराया जाता है। १२ संगीत विषय की अध्यापिकाएँ हैं जो सामुदायिक गायन कार्यक्रम में प्रशिक्षित हैं। सामान्य विषय के एक शिक्षक हैं जिन्हें उक्त कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया है ।

३३ छात्र/छात्राओं से ज्ञात हुआ है कि यद्यपि प्रशिक्षित संगीत शिक्षिका वर्ग ही इस कार्यक्रम का संचालन करते हैं, किन्तु अन्य सामान्य विषयों की शिक्षिकाएँ भी इस कार्य में उन्हें अपना सहयोग प्रदान करती हैं। विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण उत्सवों में, राष्ट्रीय पर्वों के अवसरों पर। अतः उनको भी प्रशिक्षित होना चाहिए।

इस कार्यक्रम के अभ्यास हेतु छात्र/छात्राओं से लिखित एवं प्रायोगिक कार्य कराये जाने से सम्बन्धित जानकारी ।

तालिका–१८

छात्र/छात्राओं की कुल संख्या	सामुदायिक गायन में प्रायोगिक कार्य	सामुदायिक गायन में लिखित कार्य	सामुदायिक गायन लिखित/ प्रायोगिक दोनों कार्य	इस सम्बन्ध में अन्य प्रतिक्रिया
३६	√	—	√	—
३०	√	—	—	—
४	—	—	—	√

तालिका-१८ देखने से विदित होता है कि ३६ छात्र/छात्राओं के मतानुसार प्रशिक्षित शिक्षक/शिक्षिकाओं ने इस कार्यक्रम में प्रायोगिक कार्य के साथ ही साथ लिखित कार्य पर भी बल दिया है तथा इसे कार्य रूप में परिणत भी करवाते हैं ।

३० छात्र/छात्राओं वर्ग का मत है कि केवल प्रायोगिक कार्य ही कराये जाने पर बल दिया गया है ।

इसके अतिरिक्त ४ छात्राओं ने उक्त सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासायें नहीं व्यक्त की है । वे इस बिन्दु पर बिल्कुल मौन हैं । इससे यह प्रतीत होता है कि सभी विद्यालयों में सामुदायिक गायन कार्यक्रम के अभ्यास पर बल दिया जा रहा है । प्रायोगिक रूप से, लिखित रूप से अथवा प्रायोगिक, लिखित दोनों प्रकार से । इस सम्बन्ध में ४ छात्राओं ने अपना मत व्यक्त नहीं किया है । इससे यह ज्ञात होता है कि इस कार्यक्रम के अभ्यास में उनका योगदान कम रहा है ।

तालिका–१९

सामुदायिक गायन कार्यक्रम के अभ्यास के फलस्वरूप प्राप्त की गई शिक्षा के सम्बन्ध में छात्र/छात्राओं के अनुभव

छात्र/छात्राओं की कुल संख्या ७०	राष्ट्रीय एकता देश-प्रेम, देश-भक्ति की भावना में वृद्धि, भारत के गौरव की अनुभूति	आपसी सहयोग मिलजुल कर रहने की प्रवृत्ति का विकास विभिन्न वाद्य यन्त्रों, विभिन्न राग, लय सीखने की जिज्ञासा	आपसी भेदभाव जातिगत भेद-भाव का शनैः शनैः दूर होना, सभी की सहयोग-समन्वय की भावना का विकास	विभिन्न भाषाओं का ज्ञान, देश की संस्कृति, परम्परा रहन-सहन का ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा वृद्धि
छात्राओं की संख्या ५०	√	—	√	—
छात्रों की संख्या ४	√	√	-	√
छात्राओं की संख्या ५	√	√	—	√
छात्रों की संख्या ६	√	—	√	√
छात्राओं की संख्या ५	—	√	√	√

तालिका-१९ का अवलोकन करने से यह विदित होता है कि सामुदायिक गायन कार्यक्रम की शिक्षा सें अब तक छात्र/छात्राओं ने क्या-क्या बातें अनुभव की हैं, यह जानकारी मिलती है। १५ विद्यालयों के कुल छात्र/छात्राओं की संख्या ७० है। इनमें से ५० छात्राओं तथा ६ छात्रों ने (कुल ५६) इस कार्यक्रम के अभ्यास के फलस्वरूप निम्नवत सीखी गई बातों पर प्रकाश डाला है :

१—राष्ट्रीय एकता की भावना में वृद्धि।

२—देश-प्रेम तथा देश-भक्ति की भावना का संचार होना।

३—भारत के गौरव की अनुभूति ।

४—आपसी भेदभाव, जातिगत भेदभाव का शनैः शनैः दूर होना ।

५—सभी का सहयोग तथा समन्वय की भावना का विकास होना ।

५ छात्राओं तथा ४ छात्रों (कुल ९) ने इस सम्बन्ध में अपनी अनुभूति को व्यक्त किया है ।

६—आपसी सहयोग, मिल-जुल कर रहने की प्रवृत्ति का विकास ।

७—विभिन्न वाद्य यन्त्रों को सीखने की रुचि, विभिन्न राग, लय एवं ताल के विषय में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा ।

८—विभिन्न भाषाओं का ज्ञान, देश की संस्कृति, परम्परा, रहन-सहन का ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा की वृद्धि ।

५ छात्राओं ने क्र० सं० ४, ५ तथा ७ पर बल दिया है जिसके अन्तर्गत आपसी भेद-भाव का दूर होना, सभी का सहयोग एवं समन्वय की भावना का विकसित होना तथा विभिन्न वादन यन्त्रों को सीखने की जिज्ञासा आदि बातें आती हैं ।

इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में छात्र/छात्राओं द्वारा व्यक्त किये गये अनुभव अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । सामुदायिक गायन कार्यक्रम के प्रशिक्षण एवं छात्र/छात्राओं के अभ्यास तथा प्राप्त अनुभवों के फलस्वरूप यह निश्चित हो जाता है कि राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन कार्यक्रम का एक अपना विशिष्ट स्थान हैं ।

निष्कर्ष :—

उपर्युक्त विश्लेषण एवं अध्ययन से निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है, जो राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु प्राप्त उपलब्धियों के स्वामित्व के लिये लाभदायक होगा।

(१) राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन योजना के प्रचार एवं प्रसार हेतु विद्यालयों के सभी प्रधानों तथा प्रशिक्षित शिक्षक वर्ग की सहमति प्राप्त हुई है। इनके अनुसार विद्यालयों में शत प्रतिशत अभ्यास जारी है।

(२) विद्यालयों में सामुदायिक गायन के अभ्यास का कोई निश्चित समय नहीं है। सभी विद्यालय अपनी सुविधानुसार इस कार्यक्रम के अभ्यास की व्यवस्था करते हैं। इस योजना को शत प्रतिशत सफलीभूत बनाने के लिये समय पर्याप्त नहीं है।

(३) विद्यालय के प्रधानों तथा शिक्षक/शिक्षिकाओं के मतानुसार सामुदायिक गायन के कार्यक्रम के अभ्यास का प्रभाव छात्र/छात्राओं के आचरण एवं व्यवहार पर अवश्य पड़ा हैं, फलस्वरूप छात्र/छात्राएँ इस कार्यक्रम से अवश्य लाभान्वित हुये हैं।

(४) ८७ प्रतिशत प्रशिक्षित शिक्षक वर्ग के मतानुसार सामुदायिक गायन से सम्बन्धित अन्य क्रिया-कलाप भी राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सहायक होते है।

(५) सामुदायिक गायन प्रशिक्षण पर बल दिया जा रहा है। विद्यालयों में एक ही प्रशिक्षित अध्यापिका छात्र/छात्राओं को इस कार्यक्रम का अभ्यास कराती है।

(६) विभिन्न भाषाओं में सामुदायिक गायन का वास्तविक अर्थ, सुर एवं लय की सही अनुभूति भाषाओं की वास्तविक जानकारी के फलस्वरूप ही सम्भव है, जिसके प्रशिक्षण के लिए अभ्यास की आवश्यकता है।

(७) शत प्रतिशत शिक्षक वर्गों के मतानुसार छात्र/छात्राएँ इस कार्यक्रम के अभ्यास में रुचि ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त इससे सम्बन्धित अन्य कार्य-कलापों का भी उन्हें अभ्यास कराया जाता है।

(८) इस कार्यक्रम को सफलीभूत बनाने के लिये विभिन्न संस्थाओं द्वारा शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

(९) विभिन्न भाषाओं में अन्य राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी गीतों का चयन किया जाय और छात्रों को उनका अभ्यास कराया जाय, जिससे धीरे-धीरे राष्ट्रीय एकता की भावना सभी में जागृत हो सके।

(१०) छात्र/छात्राओं के मतानुसार यद्यपि प्रशिक्षित शिक्षक वर्ग ही इस कार्यक्रम का संचालन करते हैं किन्तु सामान्य विषय के शिक्षक/शिक्षिकाएँ भी उन्हें अपना सहयोग प्रदान करते हैं। अतः उनको भी प्रशिक्षित होना चाहिए।

(११) इस कार्यक्रम के उन्नयन में प्रत्येक विद्यालय को वी० डी० ओ० कैसेट, सम्बन्धित टेप रिकार्ड्स एवं सामुदायिक गायन पुस्तकों का दिया जाना लाभकारी होगा।

(१२) सामुदायिक गायन को जूनियर स्तर पर अनिवार्य विषय के रूप में मान-कर उसमें परीक्षा उत्तीर्ण करना छात्र/छात्राओं के लिए अनिवार्य करना आवश्यक होगा।

(१३) प्रशिक्षित शिक्षक वर्ग तथा छात्र/छात्राओं को विभिन्न प्रदेशों के भ्रमण का अवसर देना अति आवश्यक होगा जिससे वे विभिन्न प्रदेशों के रहन-सहन, वेश-भूषा, आचार-विचार, खान-पान एवं संस्कृति से भलीभाँति परिचित हो सकें।

(१४) विभिन्न वाद्य यन्त्रों का सामुदायिक गायन कार्यक्रम में उपयोग लाभकारी होगा।

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन हेतु सुझाव

देश की भावात्मक एकता और राष्ट्रीय एकता के सम्वर्द्धन हेतु सामुदायिक गायन एक ऐसी योजना हैं जिसके माध्यम से विविधताओं के होते हुये भी एकता की अनुभूति भारतीय जन-मानस कर सकता है। अतः यदि सभी भाषाओं से ऐसे गीतों का चयन किया जाय, जो सम्पूर्ण देश को एकता की अनुभूति में बाँध सके, तो यह एक बहुत सार्थक प्रयास होगा। सामुदायिक गायन के मूल में यह प्रेरणा निहित है। इसी के फलस्वरूप इसको राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में अंगीकृत किया गया है।

अत: इस कार्यक्रम को सफल बनाने एवं प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के बालक/बालिकाओं के विद्यालयों में राष्ट्रीय एकता के उन्नयन हेतु निम्नवत सुझाव महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय प्रतीत होते हैं :

(१) संगीत आनन्द की कला है । यह जीवन की विसंगतियों का दमन करके सामंजस्य की स्थापना करती है । मानव मन पर संगीत का असंदिग्ध रूप से प्रभाव पड़ता है । संगीत भावात्मक एकता का सर्वोत्तम माध्यम है । इससे जीवन में सरसता की अनुभूति होती है । देश की एकता और अखण्डता एवं शान्ति और सुव्यवस्था के लिये यह आवश्यक है कि देश के बालक/बालिकाओं के लिये संगीत को एक अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाय ।

(२) राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के अन्तर्गत राष्ट्रीयता को सबसे अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है । अत: बाल रुचि पर आधारित विभिन्न भाषाओं के गीतों का चयन किया जाना अपेक्षित होगा । देश के सभी बच्चे विभिन्न प्रदेशों की प्रमुख भाषाओं के राष्ट्रीयता-परक गीतों का भावपूर्ण ढंग से गायन करें तो इससे उनमें भाषायी सौहार्द और प्रेम की भावना का विकास होगा ।

(३) देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के समस्त संगीत अध्यापक/अध्यापिकाओं को उनके स्तरानुकूल प्रशिक्षित किया जाना अत्यावश्यक होगा । यद्यपि हमारी सरकार इस ओर विशेष रुचि ले रही है, किन्तु अभी पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब है ।

(४) सामुदायिक गायन का नियमित अभ्यास करने के लिये यह आवश्यक है कि विद्यालयों के समय विभाग चक्र के अन्तर्गत कम से कम एक घंटा प्रतिदिन अध्यापक एवं छात्र/छात्राओं को समय दिया जाय, जिससे इसका अभ्यास नियमित रूप से करना, कराना संभव हो सके । विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्याओं का कर्त्तव्य होगा कि वे इस योजना के कार्यान्वयन एवं अभ्यास के प्रति विशेष रूप से रुचि लें क्योंकि अभी तक विद्यालयों में यह कार्यक्रम नियमित रूप से प्रार्थना स्थल पर सामूहिक ईश-वन्दना के रूप में ही सम्पन्न होता रहा है ।

(५) राष्ट्रीय एकता, मानवीय मूल्यों और चरित्र-निर्माण में सामुदायिक गायन प्रशिक्षण कार्यक्रम एक महत्त्वपूर्ण कदम है। अतः इसके कार्यान्वयन को सफलीभूत बनाने के लिए तिमाही, छमाही तथा वार्षिक परीक्षाओं के अन्तर्गत इस विषय की परीक्षा का लिया जाना भी आवश्यक होगा, जिसमें उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही छात्र/छात्राएँ अगली कक्षा में प्रवेश पा सकें।

(६) समुदायिक गायन प्रशिक्षित संगीत शिक्षक वर्ग को सम्बन्धित टेप रिकार्डस, चयनित गीतों का कैसेट तथा गीतों की पुस्तिकाओं को देने की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे वे छात्रों के मध्य इसका उपयोग कर शुद्ध तथा सही उच्चारण, भाषा, लय और विभिन्न भाषाओं के गीतों से परिचित करा सकें।

(७) विद्यालय के बालक/बालिकाओं को विभिन्न प्रदेशों में भ्रमण का अवसर भी प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे उन प्रदेशों की वास्तविकताओं से परिचित हो सकें।

(८) शिक्षा विभाग के उच्चतम अधिकारियों द्वारा विद्यालयों के प्रधानों से इस विषय में सम्पर्क का बना रहना भी लाभकारी होगा। अतः समय-समय पर सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण आदेश दिये जाने चाहिए और मीटिंगों के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होना भी हितकर होगा।

(९) विद्यालय के प्रधानों का यह कर्त्तव्य होगा कि सामुदायिक गायन कार्यक्रम की प्रगति आख्या से अपने अधिकारियों को अवगत कराते रहें।

(१०) सामुदायिक गायन कार्यक्रम की सफलता के लिये यह आवश्यक होगा कि समय-समय पर शिक्षा विभाग के अधिकारी विद्यालयों में जाकर स्वतः इस कार्यक्रम का निरीक्षण कर त्रुटियों की ओर प्रधानों का ध्यान आकर्षित करें।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सभी स्तरों पर सामुदायिक गायन योजना कार्यक्रम को सफल बनाने का प्रयास किया गया, तो यह निश्चित है कि इससे राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में अत्यधिक बल मिलेगा और धीरे-धीरे इस योजना के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं के सामुदायिक गीतों के संगीत से भारतीय जनता की भावात्मक एकता जागृत होगी और अपनी अद्‌भुत विविधताओं को सुरक्षित रखते हुये पूरा राष्ट्र एक सशक्त इकाई के रूप में प्रतिष्ठित होगा।

———

पत्रांक २११०-/८७-८८ दिनांक ८-१२-८७

२२१०

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन

पृच्छ प्रपत्र—१ (प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या हेतु)

महोदय/महोदया,

संस्थान राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक स्तरीय सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन कर रहा है। इस सम्बन्ध में आप जो सहज रूप में अनुभव करते हैं उसे निःसंकोच व्यक्त करने की कृपा करें तथा पत्र प्राप्ति के पन्द्रह दिन के पश्चात् आप स्वयं तथा अपने संस्था की सम्बन्धित अध्यापक/अध्यापिका एवं छात्र/छात्राओं को भेजे गये पृच्छा प्रपत्र की पूर्ति करवा कर अवश्य संस्थान को भेजने का कष्ट करें।

पता :—

प्राचार्य

राजकीय सी० पी० आई०, इलाहाबाद

१—नाम··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

२—विद्यालय का नाम··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

३—क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक गायन सम्बन्धी कार्य होता हैं (हाँ/नहीं) ? सही (√) निशान बनायें ।

४—यदि होता है तो आपने कितना समय इस विषय हेतु निर्धारित किया है ?
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

५—यदि नहीं तो क्यों ? ··· ··· ··· ··· ···· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

६—क्या आपकी दृष्टि में राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन का कराया जाना उचित है (हाँ/नहीं) ? सही (√) निशान बनायें ।

७—यदि नहीं, तो इसके सुधार हेतु अन्य विकल्प देते हुये अपना मत व्यक्त करें ।
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

८—क्या सामुदायिक गायन के अभ्यास से आपको अपने विद्यालय के छात्र छात्राओं के आपसी आचरण एवं व्यवहार में कोई परिवर्तन परिलक्षित होता है (हाँ/नहीं) ? सही (√) निशान बनायें ।

९—क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक गायन से सम्बन्धित अन्य कार्य-कलाप भी कराये जाते हैं (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें ।

१०—यदि हाँ, तो कौन कौन से कार्य-कलाप कराये जाते हैं।

१—

२—

३—

११—आपके विद्यालय में सामुदायिक गायन सम्बन्धी कार्य सामान्य अध्यापकों द्वारा होता है अथवा इसके लिये आपने संगीत अध्यापक की व्यवस्था की है ?

१—संगीत अध्यापक

२—सामान्य अध्यापक

१२—राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन के अन्तर्गत और क्या क्या सुधार लाया जा सकता है ? आप अपना सुझाव संक्षेप में लिखें।

... ...

... ...

... ...

... ...

प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या का हस्ताक्षर

.. ..

तिथि ... ...

———

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन

पृच्छा प्रपत्र—२ (अध्यापक/अध्यापिका हेतु)

महोदय/महोदया,

संस्थान माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन कर रहा है। अतएव आपसे सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से यह पृच्छा प्रपत्र भेजा रहा है। आपसे अनुरोध है कि आप अपना स्पष्ट विचार निर्धारित स्थान पर लिखकर पत्र प्राप्ति के एक सप्ताह के पश्चात् इसे वापस करने का कष्ट करें।

पता—

प्राचार्य

राजकीय सी० पी० आई०, इलाहाबाद

१—नाम ... ...

२—अध्यापन के विषय ... ...

३—विद्यालय का नाम ... ...

४—क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक गायन सम्बन्धी कार्य कराया जाता है (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

५—क्या आपको भी सामुदायिक गायन सम्बन्धी कार्य दिया गया (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

६—यदि हाँ तो इस कार्य के अभ्यास हेतु आपको प्रति सप्ताह कितना समय प्रदान किया गया है ?

(एक घण्टा/दो घण्टे/तीन घण्टे)

७—क्या इतना समय इस विषय के अभ्यास हेतु पर्याप्त है (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

८—क्या आपने सामुदायिक गायन के सम्बन्ध में कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया है (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

९—यदि हाँ तो कहाँ से और किस स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया है ?

... ...

... ...

१०—क्या छात्र/छात्राएँ सामुदायिक गायन में रुचि लेते हैं (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

११—क्या इससे सम्बन्धित किसी अन्य कार्यकलाप का भी प्रशिक्षण आप विद्यार्थी को देते हैं (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

१२—यदि हाँ, तो कराये गये कार्य-कलाप के नाम लिखें ।

१—

२—

३—

१३—छात्र एवं छात्राओं में राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की रक्षा सम्बन्धी भावना भरने हेतु सामुदायिक गायन विद्या को कैसे उपयोगी और प्रभावशाली बनाया जा सकता है ? अपने सुझाव दें ।

... ...

... ...

... ...

... ...

अध्यापक हस्ताक्षर.....

दिनांक.....

राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में माध्यमिक विद्यालयों में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन

पृच्छा प्रपत्र – ३ (छात्र/छात्राओं हेतु)

छात्र/छात्राओ,

संस्थान माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीय एकता के उन्नयन में सामुदायिक गायन के प्रयासों का अध्ययन कर रहा है । आप स्वेच्छा से इस प्रपत्र पर सूचना दें ।

पता :—

प्राचार्य

राजकीय सी० पी० आई०, इलाहाबाद

१—नाम ... ...

२—कक्षा ... ...

३—विद्यालय का नाम ... ...

४—क्या आपके विद्यालय में सामुदायिक गायन की शिक्षा दी जाती हैं (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें।

५—यदि हाँ, तो सप्ताह में यह विषय कितने वादन (पीरियड) कराया जाता हैं ? सही (√) का निशान बनायें।

१—एक घण्टा

२—दो घण्टे

३—तीन घण्टे

४—नित्य कितने घण्टे

६—क्या आपको यह कार्य रुचिकर लगता है (हाँ/नहीं) ? सही (√) का निशान बनायें ?

७—यदि हाँ, तो क्यों ? ... ...

८—यदि नहीं तो क्यों ? ... ...
... ...
... ...
... ...
... ...

९—क्या इसका प्रशिक्षण देने के लिए आपके विद्यालय में विशिष्ट रूप से अध्यापक/अध्यापिकाओं की नियुक्ति की गयी है अथवा सभी इस कार्य में सहयोग देते हैं ? संक्षेप में उत्तर दें। ... ...
... ...
... ...
... ...
... ...

१०—इस विषय के अन्तर्गत केवल प्रायोगिक कार्य कराया जाता है अथवा लिखित कार्य भी कराया जाता है ? सही का निशान (√) बनायें ।

१—प्रायोगिक कार्य ... ...
... ...

२—लिखित कार्य ... ...
... ...

३—दोनों ... ...
... ...

११—सामुदायिक गायन की शिक्षा से अब तक आपने क्या सीखा हैं ? दो प्रमुख बातें लिखिए ।

१ ... ...

२ ... ...

छात्र/छात्रा का हस्ताक्षर ... ...

पता : ... ...
... ...

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Aministration
17-B, SriAurbindo Marg, NewDelhi-110016
DOC. No. 4860
Date 12/9/89

NIEPA DC
D04860